संपादकीय

बड़े हर्ष की बात है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की इस वर्ष अपनी स्थापना की रजत जयन्ती मना रहा है। संस्थान की एक मात्र वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'प्रवाहिनी' का यह रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक तथा समसामयिक जानकारियों से सुसज्जित 11वां अंक परिष्कृत एवं समुन्नत रुप में आपके सम्मुख प्रस्तुत है। संस्थान की रजत जयन्ती के संदर्भ में इस अंक को विशेषांक के रुप में प्रस्तुत किया गया है।

वर्तमान प्रकाशन विगत प्रकाशनो से थोड़ा भिन्न है क्योंकि इसमें सिर्फ संस्थान के ही प्रबुद्ध लेखकों के लेख सम्मिलित नहीं किए गए हैं अपितु देश के विभिन्न विद्वानों एवं हिन्दी-प्रेमी लेखकों के लेख एवं रचनाओं को भी समुचित स्थान दिया गया हैं। इस पत्रिका में लेखों को दो स्तंभो में प्रस्तुत किया गया है। इस पत्रिका को जलविज्ञानीय शोध संबंधी शीर्षस्थ संस्था की एक मात्र हिन्दी पत्रिका होने का गौरव प्राप्त हैं। इस पत्रिका में ज्ञान, विज्ञान, चिकित्सा, जलविज्ञान, प्रदूषण, पर्यावरण एवं अन्य ज्वलंत विषयों से संबंधित कृतियों एवं रचनाओं को पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है।

हमें आशा है कि इस पत्रिका में प्रस्तुत लेख जनसाधारण के जीवन में उपयोगी एवं सार्थक सिद्ध होंगे। इस अंक के लिए हमें जो लेख प्राप्त हुए हैं, उनके लिए हम उन समस्त विद्वत्त लेखकों के आभारी हैं जो अपने बहुमूल्य एवं अति व्यस्ततम् समय में से कुछ क्षण निकालकर इस ज्ञान रुपी मनोहारी अविरल प्रवाहित होती गंगा की धार के हस्ताक्षर बने।

संपादक मंडल